२ तीमुथियुस

(2 Timothy)

२ तिमोथी (2 Timothy)

१ **जीवन** की प्रतिज्ञा जो मसीह यीशु में है, उसके अनुसार परमेश्वर की इच्छा के व्दारा पौलुस यीशु का प्रेरित है ।
२,३ **मेरे** अति प्रिय बेटे तिमोथी, सृजनहार पिता और यीशु मसीह की ओर से तुम्हें असीम दया और शान्ति मिले । **मैं** अपने उस
स्वर्गिक पिता का आभारी हूँ, जिसकी सेवा मेरे पूर्वजों ने की और मैं भी शुध्द विवेक से करता हूँ । मैं रात-दिन अपनी प्रार्थनाओं
४ में तुम्हें निरन्तर याद करता हूँ । तुम्हारे आँसुओं को याद करने पर मेरे भीतर बड़ी लालसा यह होती है, कि तुम्हें देखकर
५ खुशी से भर जाऊँ । जो विश्वास पहले तुम्हारी नानी लोइस और माँ यूनिस में था, मैं निश्चित हूँ कि वही सच्चा विश्वास तुममें
७ है, जिसकी याद मुझे आती है । मेरे हाथों के तुम्हारे ऊपर रखे जाने से जो वरदान तुम्हें मिला था, मैं याद दिलाना चाहता
८ हूँ कि तुम्हें उस यहोवा के ईनाम को सुलगाने करने की ज़रूरत है । इसलिए कि यहोवा ने हमें डर की नहीं किन्तु शक्ति,
९ प्यार और ठण्डे दिमाग की आत्मा दी है ।तुम यीशु और मुझ कैदी की गवाही से शर्मिन्दा न हो, किन्तु सृष्टिकर्ता की ताकत
से शुभसंदेश को सुनाये जाने के कारण आनेवाले कष्टों को मेरे साथ सहा । उन्होंने हमें मुक्ति दी और पवित्र बुलाहट से बुलाया
है । ऐसा हमारे भले कामों के कारण नहीं, किन्तु उनके अपने उद्देश्य और शर्तहीन कृपा के कारण था, जो सृष्टि के बनाए
१० जाने से पहले मसीह यीशु में हमें मिला था । **जिन** यीशु मसीह ने शुभसंदेश के व्दारा मौत को नाश किया और जीवन एवं
अमरता को हमारे सामने रखा, उन्हीं मुक्तिदाता यीशु मसीह के पृथ्वी पर आने से यह (मुक्ति और पवित्र बुलाहट) अब हमारे
११ सामने प्रस्तुत है । **गैर** यहूदियों को यही शुभसंदेश देने के लिए मैं एक संदेशवाहक, प्रेरित और शिक्षक ठहराया गया हूँ ।

१:१ -रोमि १:१, गल १:१ ***"अनुसार"*** सबसे बढ़कर पौलुस की प्रेरिताई जिस बात के लिए थी वह है: यह सच्चाई कि सृजनहार ने अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा उनके लिए की, जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया था (तुलना करें रोमि १:२; तीतुस १:२; १ यूहन्ना ५:९:१२)

१:२ -१ तिमो १:२ ।

१:३ - ***"स्वर्गिक पिता का आभारी हूँ"*** - रोमि १:८; १ कुरि १:४; फिलि १:३; कुलु १:३; १ थिस्सु १:२ ।

"पूर्वज" - ओल्ड टॅस्टामॅन्ट में यहोवा के सेवक । पौलुस यह संकेत करता है कि सच्चे मत और सेवा की जड़े वहीं हैं । उसके विश्वास और सेवा का सम्बन्ध उन्हीं से है ।

"शुध्द विवेक" - प्रेरित २३:१; २४:१६; १ कुरि ४:४; २कुरि १:१२ ।

"रात -दिन" - (पौलुस जेल में था पद ८) लेकिन उसकी सेवा बन्द नहीं हुयी थी । प्रार्थना के लिए उसके पास काफी समय था, जिस अवसर को उसने नहीं खोया ।

१:४ - ***"आँसू"*** शायद पौलुस अपनी आखिरी बिदाई की ओर संकेत करता है । तिमोथी के आँसू पौलुस के प्रति उसके प्यार को और पौलुस के अटूट विश्वास को दिखाते है । तुलना करें प्रेरित २०:३७,३८ ।

"बड़ी लालसा" रोमि १:११; थिस्सु ३:६; फिलि १:८

१:५ -तिमोथी का पिता और दादा यूनानी थे और शायद मसीह के मानने वाले नहीं । उसकी माँ और नानी यहूदी थे । उसकी माँ और नानी ने मसीह के संदेश पर विश्वास किया था (प्रेरित १६:१-३) ।

१:६ -यहाँ वरदान का अर्थ एक पैदाईशी योग्यता से नहीं हैं, जिसे स्वर्गिक पिता ने तिमोथी को किसी समय दी थी । प्रभु के सेवक ऐसी योग्यता के प्रति लापरवाह होकर उसे समाप्त कर सकते हैं । इसलिए पौलुस यहाँ हिम्मत बढ़ाता है । मण्डली के अगुवों के व्दारा रखे जाने से तिमोथी ने वरदान ग्रहण किया था (१ तिमो ४:१४) हमें यह नहीं मालूम कि पौलुस उसी की ओर इशारा कर रहा है । अलग अलग कारणों से दो बार हाथों का रखना आम बात थी । प्रेरित ८:१७, १३:३ देखें ।

१:७ - ***"डर की नहीं"*** ऐसा लगता है कि इस्तेमाल के लिए साहस की कमी की वजह से इस आत्मिक योग्यता की लपटों को बुझा देने की प्रवृत्ति तिमोथी में थी । स्वर्गिक पिता के वरदान के उपयोग के लिए साहस की आवश्यकता थी । (प्रेरित ४:२९; इफि ६:१९)। मसीह की सेवा के लिए तीन और बातों की आवश्यकता के सम्बन्ध में कहता है । यहोवा का आत्मा वह देता है । जब प्रभु हमे सेवा का निमत्रण देते हैं, तो उसके लिए योग्यता भी देते हैं (२ कुरि ३:५,६)

"शक्ति" - प्रेरित १:८; १ कुरि २:४; ४:२०; २ कुरि ४:७; १२:९; इफि १:१९; ३:१६; कुलु १:११ ।

"प्यार" बिना सामर्थ प्रेम काम नहीं करता । बिना प्रेम के शक्ति हानिकारक होगी फायदेमन्द नहीं । सबसे बड़ी बात जिसकी मसीह के सेवकों को आवश्यकता है : वह है प्रेम - १ कुरि १३:१-३ ।

"ठण्डे दिमाग" या शायद ***"संयम"*** । यह स्वस्थ तरीके से सोचने, विचारों को वश में करने और बर्ताव करने की योग्यता है । १ तिमो ३:२ ।

१:८ - ***"शर्मिन्दा"*** - मरकुस ८:३८; रोमि १:१६ । बहुत से लोग मसीह के संदेश को बेवकूफी समझते हैं (१ कुरि १:१८,२३), मसीह के क्रूस के संदेश दिए जाने से उन्हें खराब लगता है (गल ५:११) स्वभाव से डरपोक विश्वासी घमण्ड के कारण जो आसानी से भीतर आ जाता है, दूसरों को मसीह के बारे में बताने से झिझक सकता है । सृजनहार के आत्मा की मदद से इस रवैयों से हमें बचना चाहिए ।

"कैदी" - २:९; इफि ३:१ ।

"आनेवाले कष्टों" जो शुभसंदेश देते हैं या विश्वास करते हैं, उनके कारण आनेवाले दुःख - २:३; ४:५; रोमि ५:३; ८:१७; २ कुरि ४:१७; १ पत ४:१२-१६ ।

१:९ - ***"पवित्र बुलाहट"*** रोमि १:६; ८:३०; १ कुरि १:२; इफि १:४ ।

"उद्देश्य" इफि १:५, ९,१२ ।

"शर्तहीन कृपा" रोमि ३:२४; इफि २:८,९; तीतुस ३:५७ ।

"मसीह में" यूहन्ना १५:४; रोमि ६:५; ८:१; इफि १:१,४ ।

"सृष्टि के बनाए जाने से पहले" - इफि १:४; तीतुस १:२

१:१० - ***"हमारे सामने रखा"*** - यूहन्ना १:१७ ।

"मौत को नाश किया" मत्ती २८:६; इब्रा २:१४; यूहन्ना ५:२४; ११:२५,२६ मसीह ने मौत का तमाशा बनाया १ कुरि १५:२६ और विश्वासियों के लिए अनन्त जीवन का रास्ता खोल दिया - यूहन्ना ३:१६; ५:२४; ६:४७ । उन्होंने जीवन और अमरता के सम्बन्ध में सत्य को प्रगट कर दिया है - वह सत्य जो उनके आने से पहले छिपा था । अमरता के सम्बन्ध में १ कुरि १५ में देखें ।

१:११ - १ तिमो २:७

१२ **इसी** कारणवश मैं इन दु:खों को झेल रहा हूँ । फिर भी मैं शर्मिन्दगी नहीं महसूस करता क्योंकि मैं यह जानता हूँ, कि जिन
१३ पर मैंने भरोसा किया है और जो कुछ उन्हें मैंने सुपुर्द कर दिया है, उसे वह संभालने में सक्षम हैं । **मसीह** यीशु में जो विश्वास
१४ और प्रेम के साथ सही शिक्षा तुमने सुनी थी, उसे मज़बूती से पकड़े रहो ।**जो** अच्छी वस्तु तुम्हें सौंपी गयी थी, उसे हमारे भीतर
१५ रहनेवाले पवित्र आत्मा के व्दारा संभाले रहो । **तुम्हें** मालूम है कि एशिया में सभी, यहाँ तक कि फुगिलुस और हिरमुगिनेस
१६ ने भी हमें तज दिया था । **उनेसिफोरस** के परिवार के ऊपर यीशु कृपा करें क्योंकि कई बार उसने मेरी हिम्मत बढ़ायी और
१७ मेरे कैदी होने के कारण लज्जा महसूस नहीं की । **जब** वह रोम में था, तो बहुत मेहनत करके मुझे खोजता रहा और मुझे
१८ पा भी लिया । **काश** ऐसा हो कि उस दिन वह परमेश्वर की दया को हासिल कर सके । तुम्हें तो मालूम है कि
२ इफिसुस में उसने कितने तरीकों से मेरी सेवा की थी । **इसलिए** मसीह यीशु में जो शर्तहीन दया है, उसमें मज़बूत हो जाओ ।
२ **अनेक** गवाहों की उपस्थिति में, तुमने जो कुछ मुझ से सुना था, उन्ही बातों को उन विश्वास योग्य लोगों को सौंप दो, जो
३,४ दूसरों को भी सुनाने के योग्य होंगी । **यीशु** मसीह के अच्छे सैनिक की तरह कठिनाईयों को सहते रहो ।**ऐसा** संभव ही नहीं
कि एक व्यक्ति सेना में भर्ती होने के बाद आम आदमी के समान जीवन बिताना चाहे, ऐसे में वह भर्ती करने वाले को

१:१२- पौलुस के दुख (२:९; २ कुरि १:८; ४:८-१२; ६:४-१०; ११:२३-२७) इसलिए झेलने पड़े क्योंकि वह मसीह का सेवक था (यूहन्ना १५:१८-२१; १६:१-४) । यदि वह सेवकाई रोकता तो वे न होते । उसने ऐसा इसलिए नहीं किया क्योंकि वह मसीह के लिए दुख उठाने में शर्माता नहीं था । रोमि ५:३; २ कुरि ४:१७; १२:१०; कुल १:२४) ।

"जिन पर मैंने भरोसा" वह यह जानता था कि उसने क्या विश्वास किया है । यहाँ वह मसीह के बारे में व्यक्तिगत ज्ञान की बात करता है । यही सदाकाल का जीवन है (यूहन्ना १७:३) प्रभु के सभी बच्चों को यह ज्ञान है (इब्रा ८:११)

"सुपुर्द कर दिया है" शायद वह अपनी बात कर रहा है । बहुत समय पहले उसने मसीह के मज़बूत हाथों में स्वयं को सौंपा था । वह निश्चित था कि पालनहार की देखरेख से कुछ भी उन्हें हटा नहीं सकता तुलना करें रोमियों ८:३५-३९; यूहन्ना १०:२८; १:पत १:५ ।

"उस दिन" - मसीह का दोबारा आना ।

१:१३ पौलुस ने तिमोथी को यहोवा की सच्चाई सिखायी थी । स्वयं मसीह ने पौलुस को सिखाया था - गल १:११,१२; इफि ३:२,३ । तिमोथी को अपना सिध्दान्त नहीं बनाना था । न ही हमें ऐसा करना है । सदा के लिए जो परमेश्वर ने नमूना दिया है, उसे ही अपनाना है । यदि हम वचन देते हैं सिखाते हैं हमें इसी नमूने को अपनाना और इसके अनुसार बनाना चाहिए । यदि हम ऐसा नहीं करते तो इसको बिगाड़ डालेंगे ।

"विश्वास - प्रेम" जीवित विश्वास के साथ हमें पौलुस की शिक्षा को पकड़े रहना है । हमारे लिए इसे मात्र कट्टरतावाद नहीं बनना चाहिए । (तुलना करें यूहन्ना ५:३८-४०; ४५-४७) । हमें सत्य को प्रेम से पकड़े रहना चाहिए । यह काफी नहीं कि सही सिध्दान्त है, और अपने मत के जोश के साथ फैलाएं । यही हमारे पास प्यार नहीं है, तो हम कुछ भी नहीं १ कुरि १३:१-३

"मसीह में" - पद ९

१:१४ ***"अच्छी वस्तु"*** यह यीशु का सत्य और सही शिक्षा थी । मसीह के सेवकों को इसे संभालना क्यों है ? इसलिए क्योंकि कलीसिया और लोगों से कोई न कोई छीनना चाहेगा ।

"पवित्र आत्मा" यूहन्ना १४:१६,१७ के नोट्स देखें । पालनहार यह नहीं चाहते कि हम उनके सत्य को अपनी बहस, समझ और बल से सुरक्षित रखें । उन्होंने अपने सेवकों को उनकी स्वभाविक बुध्दि और बल से कहीं अधिक शक्ति दी है । तुलना करें मत्ती १०:१९,२०; लूका २१:१५,यूहन्ना १६:१३-१५; प्रेरित ४:१३ ।

"भीतर रहने वाले" - रोमि ८:९; १ कुरि ६:१९

१:१५ पौलुस जेल में और खतरे में था । यह शोक की बात है कि जब लोगों को उसके संकट में सहायता देनी चाहिए थी, नहीं दी (४:१६)तुलना करें मत्ती २६:५६

"एशिया" प्रेरित १६:६ देखें ।

१:१६-१८ ***"उनेसिफोरस"*** - जिनका वर्णन वह १५ पद में कहरता है, उनसे वह बहुत भिन्न था । उन्होंने तरीके खोजे, जिससे पौलुस की सहायता करें उसने पौलुस को खोज निकाला ताकि मदद करें । आज भी ऐसे मसीही संसार में हैं ।

"दया" (पद १८) प्रभु के वचन के अनुसार ही पौलुस की इच्छा थी । मत्ती ५:७ । यदि हम दूसरों की मदद नहीं करते या दयालु नहीं हैं, प्रभु से हमें दया की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए ।

२:१ आत्मिक बल स्वर्गिक पिता का वरदान है जो मसीह में सभी विश्वासियों को मिलता है । हमें यह प्राप्त करना चाहिए ।(इफि१:३,१९; ३:१६,२०,६:१०; २कुरि१२:९,१०; यशा ४०:३१) ।

२:२ पृथ्वी पर सत्य को फैलाने का यही तरीका है जिसे सृजनहार ने चुना है । पौलुस ने तिमोथी को सिखाया था (१:१३) तिमोथी को दूसरे लोगों और उन लोगों को अन्य लोगों को सिखाना था। तुलना करें मत्ती २८:१९,२० ।

"विश्वासयोग्य लोगों" यह बेकार है कि महत्वपूर्ण बातों को लापरवाह लोगों को सौंपा जाए । तुलना करें मत्ती २४:४५-५१; १ तिमोथी १:१२; १ कुरि ४:१, २ ।

२:३ ***"कठिनाईयों"*** - १:८ ३:१२; यूहन्ना १६:३३ प्रेरित १४:२२ ।

"अच्छे सैनिक" - इफि ६:११-१८ । मसीह की आत्मिक सेना में सभी विश्वासी सैनिक है । सैनिक का कर्तव्य हमें पूरा करना चाहिए । निस्संन्देह यह उनके सम्बन्ध में भी सही हैं जिन्हें अगुवा बनाया गया है । किसी भी कीमत पर हमें कठिनाईयों से बचने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए, न ही कुडकुड़ाना और शिकायत करना है ।

२:४ ***"आम आदमी के समान"*** विश्वासी और सेवकाई में लगे लोग यदि अपने जीवकोपार्जन के लिए कुछ कार्यों करे, तो कुछ बुरा नहीं । प्रेरित १८:३; २०:३४,३५; १ थिस्सु ४:११,१२; २ थिस्सु ३:७-१०; तीतुस ३:१४ । यदि हम उन कार्य में इतना फँस जाते है, कि यीशु के अच्छे सैनिक बने नहीं रहते तो यह गलत है । हमें क्या क्या कब करना है, इसमें बुध्दिमान होना चाहिए । हमें अपने आशा देने वाले ऑफिसर (मसीह) की बात माननी है । - २ कुरि ५:९, गल १:१०; कुलु १:१०; १ थिस्स ४:१ । चाहे हम संसार के किसी कार्य में हैं हमें यह जानना है कि मसीह के मानने के लिए उन्हीं के सैनिक हैं ।

५ प्रसन्न नहीं कर सकता। **इसी** तरह से यदि एक व्यक्ति खेल-कूद प्रतियोगिता के नियमों का पालन न करे, तो भाग लेने के बावजूद
६ वह पुरस्कार प्राप्त करने के योग्य नहीं होता। **परिश्रमी** किसान इस बात का अधिकारी है, कि फसल का हिस्सा प्राप्त करे।
७,८ **जो** मैं कह रहा हूँ, उस पर ध्यान दो। सभी बातों में यीशु तुम्हें समझ दें। **यह** याद रखो कि मेरे शुभसंदेश के अनुसार
९ दाऊद के वंश में से यीशु ही थे जो मरे हुओं में जिलाए गए थे। **इसी** सत्य को दूसरों तक पहुँचाने के कारण मैं एक
अपराधी की तरह दुःख उठा रहा हूँ और जंजीर से बन्धा हुआ हूँ। किन्तु सृष्टिकर्ता का वचन जंजीर में जकड़ा हुआ नहीं है।
१० **यहोवा** के चुने हुओं के कारण मैं सब कुछ सहता हूँ, ताकि वे उस मुक्ति को पा सकें जो अनन्त महिमा के साथ मसीह
११,१२ यीशु में है। **यह** सत्य है कि यदि हम उनके साथ मर चुके हैं, तो हम उनके साथ जिएंगे भी। **यदि** हम सहते रहें, तो उनके
१३ साथ शासन भी करेंगे। यदि हम उनका इन्कार करें तो वह हमारा इन्कार करेंगे।**यदि** हम भरोसेमन्द न रहें, वह अपना इन्कार
१४ स्वयं नहीं कर सकते। **इन** बातों को उन्हें याद दिलाओ और गंभीरता से प्रभु यीशु की उपस्थिति में घोषणा करो, कि वे शब्दों
१५ के बारे में झगड़ा न करें। क्योंकि यह बात बेकार है और सुननेवालों को बर्बाद करती है।**इस** तरह का हर संभव प्रयत्न
करो कि वही किया जाए जो जग के स्वामी के सामने उचित है। एक ऐसे कार्यकर्ता बनो जो सत्य के वचन का सही इस्तेमाल करे

२:५ - ***"खेल-कूद प्रतियोगिता"*** आत्मिक क्षेत्र में विश्वासी प्रतियोगी है -१ कुरि ९:२४-२७, गल ५:७; फिलि ३:१३,१४, इब्रा १२:१। जीतनेवाले के लिए मुकुट हैं - ४:८, याकूब १:१२; १पत ५:४; प्रका २:१०। जो नियम का पालन नहीं करता, जीत हासिल नहीं कहरता। आत्मिक नियम, प्रशिक्षण और अनुशासन की आवश्यकता विश्वासियों को है। यदि वे इस पर ध्यान नहीं देते तो पुरस्कार खो देंगे - १ कुरि ९:२७; कुलु २:१८; २ यूहन्ना ८; प्रका ३:११।

२:६ - १ कुरि ९:१०; गल ६:६; यूहन्ना ४:३६; भजन १२६:५,६। यहाँ पौलुस कठोर परिश्रम पर ज़ोर डालता है। १ कुरि १५:५८।से तुलना करे।

२:७ -किसी परमेश्वरीय ज्ञान को समझाने और लागू करने में दो बातें आवश्यक हैं। हमें सोचना है, मनन करना है। वही हमें परख और बुध्दि देगें। भजन १:२; १ पत १:१३; इफि १:१८; फिलि १:९; कुलु १:९; याकूब १:५ से तुलना करे।

२:८ - रोमि १:३,४; मत्ती २८:६।

"याद रखो" - हमारे परिश्रम, आराम, आमोद प्रमोद में भूलने की संभावना है। इसलिए यह कहा गया है। व्यवस्थ ६:१२; ८:११ से मिलान करें। हमें सदा उनका ध्यान रखना है कुलु ३:१,२; इब्रा ३:१; १२:२,३। शान्ति, शक्ति और जीत का यही तरीका है।

"मेरा शुभसंदेश" - रोमि २:१६; १६:२५; १ कुरि १५:१-४।

२:९ - देखें १:१२। एक गलती जिसमें शुभसंदेश के विरोधी गिर जाते हैं, वह यही है। वे सोचते हैं कि यीशु के सेवकों को बन्द करने से उन्होंने परमेश्वर के वचन को कैद कर दिया। या उनको नाश करने पर वचन को समाप्त कर दिया। ऐसा तरीकों से सच पूछें तो शुभसंदेश और अधिक फैलता है (फिलि १:१२-१४; प्रेरित ८:३,४)। एक बीज उत्पन्न करनेवाले पौधे को मारने से बीज फैलते हैं।

२:१०-पौलुस स्वयं के लिए नहीं जिया न उसने दुःखों को अपने लिए सहा, बल्कि मसीह के लिए। १ कुरि ९:१९-२३; १०:३३-११:१; प्रेरित २०:२४ से तुलना करें।

"चुने हुओं" - मत्ती २४:२२, २४:३१; रोमि ११:७; तीतुस १:१। यहाँ पौलुस का मतलब उनसे है जिनको स्वर्गिग पिता ने मुक्ति के लिए चुना है, किन्तु वे अभी तक उनके राज्य में आए नहीं हैं। यूहन्ना ६:३७; रोम ८:२९; इफि १:४; १ पत १:१,२ से तुलना करे।

"अनन्त महिमा"- यूहन्ना १७:५; २४; रोमि ५:२; ८:१७,१८।

२:११-***"मर चुके है"*** रोमि ६:२-८; गल २:२०।

२:१२ ***"सहते रहें"*** - पद १०; मत्ती १०:२२; २४:१३; रोमि १२:१२; १ कुरि १३:७ - यूनानी शब्द का अर्थ है धीरज या साहस। धीरज और साहसे से सहते रहना सच्चे विश्वास का प्रमाण है।

"शासन" - मत्ती १९:२८; लुका १:३३; प्रका ५:१०; २०:६; २२:५। यह प्रतिज्ञा उनसे नहीं की गयी है जो मसीह के लिए कठिनाई सहने के लिए तैयार नहीं है।

"इन्कार" - मत्ती १०:३३; लूका १२:९। यहाँ पतरस के समान इन्कार की बात नहीं है लेकिन (मत्ती २६:३४,७५), इसका अर्थ इन्कार का जीवन।

२:१३ -रोमि ३:३,४; भजन ५७:१०; ८९:१,८, १४,३३; ११७:२; तीतुस १:२। विश्वासी को मुक्ति की आशा परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर है, स्वयं उसकी नहीं। प्रभु महान अपने स्वभाव और वचन के विरोध के कार्य नहीं करते।

२:१४-यहाँ एक पास्टर या शिक्षक की दो ज़िम्मेदारियां है - याद दिलाना ओर चितौनी देना। प्रभु महान के लोगों को दोनों की ज़रूरत है। प्रेरित २०:३१; रोमि १५:१५; १ कुरि ४:१४; १५:१; गल ५:२१; २ थिस्स ३:१५; २ पत १:१२,१३,१५; ३:१।

"शब्दों के बारे में झगड़े" - कुछ शब्द बहुत आवश्यक हैं - यहोवा, मसीह, सत्य, विश्वास, प्रेम, मुक्ति आदि। ये शब्द जिन सच्चाईयों को प्रगट करते हैं, उनके लिए मरना उचित है। यह निश्चित है कि यह छोटी बातों पर झगड़ना है, पद २३; ४:४, १ तिमो १:४; ४:७; ६:४। बड़े विषयों पर भी परमेश्वर के सेवकों को झगड़ना नहीं हैं (पद २४,२५) हालाँकि उन्हें उन विषयों पर जोश के साथ कहना चाहिए और दैविय शक्ति से उनके पक्ष में बोलना चाहिए।

२:१५- यहाँ प्रत्येक पास्टर, संदेश देने वाले शिक्षक के लिए उत्तम निर्देष है।

"उचित" रोमि १६:१०; १ कुरि ११:१९; २ कुरि १०:१८; गल १:१०; थिस्स २:४।

"शर्मिन्दा" यदि मसीह का कोई सेवक आलस्य एवं लापरवाही के कारण रद्दी कार्य करता है तो वह परमेश्वर की प्रशंसा नहीं पाएगा। हमारे काम को अच्छी तरह से परख जाएगा - १कुरि ३:१२-१५। हम सबकुछ इस तरह करना चाहिए, कि परमेश्वर के साम्हने खड़े रहने के लिए लज्जित न होना पड़े।

"सत्य का वचन" - इफि १:१३ और कुलु १:५ में पौलुस इसे मसीह का सुसमाचार कहता है। यहाँ वह या तो उस की ओर इशारा करता है या पूरे वचन में पालनहार के सत्य की ओर। परमेश्वर के सत्य को अच्छे से समझें और सिखाएं। सृजनहार ने हमें यह सर्वोत्तम वस्तु दी है, और परिश्रम के साथ अध्ययन किया जाना चाहिए।

"सही इस्तेमाल करें" - यूनानी में इसके लिए एक ही शब्द है। आरम्भ में इसका अर्थ था, सीधा काटना, लेकिन बाद में हो गया - सही रीति से किसी बात से निपटना।

१६,१७ और शर्मिन्दा न हो ।**और** बेकार की बकबक से बचो, क्योंकि उनसे लोग और अधिक भ्रष्ट होते जाएंगे । **उनकी** शिक्षा गैन्ग्रीन
१८ (कैन्सर) के समान फैलती जाएगी । **इन्हीं** में से हिमुनयुस और फिलेतुस भी हैं । यह कह कर कि मरे हुए जीवित हो
१६ चुके हैं, वे लोगों के विश्वास को डगमगा रहे हैं । **वे** सत्य से दूर हो गए हैं लेकिन चाहे कुछ भी हो, यहोवा की नींव इस
शिलालेख के साथ बनी हुयी है : ''यहोवा अपने लोगों को पहचानते हैं'' जो कोई मसीह का नाम लेता है, दुष्टता से दूर रहो ।''
२० **एक** बड़े घर में मात्र सोने और चान्दी के बर्तन नहीं होते हैं, किन्तु लकड़ी और मिट्टी के भी । कुछ विशेष उपयोग के और
२१ कुछ साधारण इस्तेमाल के लिए । **इसलिए** यदि जो व्यक्ति अपने आपको ऊपर वर्णित दूसरे प्रकार के लोगों के अशुध्द प्रभाव
२२ से शुध्द करेगा, वह अपने मालिक के लिए शुध्द कीमती उपयोगी और हर एक अच्दे काम के लिए तैयार होगा ।**अपनी** जवानी
की इच्छाओं पर लगाम लगाओ और जो लोग शुध्द हृदय से यीशु से प्रार्थना करते हैं, उनके साथ मिलकर ईमानदारी, विश्वास,
२३ प्रेम और शान्ति के पीछे लगे रहो ।**यह** जानते हुए कि मूर्खता के विवाद से झगड़े होते हैं, अज्ञानी लोगों से दूर रहो ।
२४,२५ **मसीह** के सेवक को झगड़ालू होने के बजाए दयालु, सिखाने के योग्य और धीरज वाला होना चाहिए ।**अपने** विरोधियों को
२६ नम्रता से सिखाना चाहिए ताकि वे मन परिवर्तन के लिए तैयार हों और सत्य की पूरी पहचान कर सकें । **हालांकि** वे शैतान
३ की इच्छा पूरी करने के लिए उसके जाल में फंसे हैं, वे होश में आकर बच जाएं ।**यह** भी समझ लो; कि अन्तिम दिनों में

२:१६ - पद १४; तिमो १:६; ६:२० ।

२:१७ - ***''गैन्ग्रीन''*** यह शरीर के तन्तुओं का नष्ट होना है ऐसे में जब खून का बहाव रूक जाता है । इसके बढने से शरीर के अंग को काटकर फेंकना भी पड़ सकता है यदि ध्यान न दिया जाए तो पूरी शरीर को नुकसान पहुँचता है । इसलिए इसके बढ़ने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । यदि एक चर्च में इसे बढ़ने दिया जाएगा तो आत्मिक मौत की सी हालत उत्पन्न हो जाएगी ।

२:१८- ***''सत्य से दूर हो गए हैं''*** - १ तिमो १:६,१६,२०; ६:१०,२१ । भविष्य में मरे हुओं का जी उठना मसीह और प्रेरितों की स्पष्ट शिक्षा है - यूहन्ना ५:२८, २६; १कुरू १५:२०-२३ । यह कहकर कि जी उठना हो चुका है, इस शिक्षा से इन्कार कर रहे थे ।

''डगमगा रहे हैं'' झूठे शिक्षक काफी गड़बड़ी उत्पन्न कर रहे थे ओर कुछ मसीही समझ नहीं पा रहे थे, कि क्या करें किन्तु यदि उनका विश्वास खरा था, तो नष्ट नहीं हो सकता था । वे कह रहे थे कि जी उठना केवल आत्मिक है - वर्तमान में मनुष्य की आत्मा का जीवित किया जाना, न कि भविष्य में उनकी देह का जी उठना ।

२:१६- झूठे शिक्षक कुछ भी क्यों न करें, वे मसीह की सच्ची कलीसिया और लोगों को नाश नहीं कर सकते । यहोवा जानते हैं कि कैसे नींव को मजबूत और अपने लोगों को विश्वास में रखें । मत्ती १६:१८; लूका २२:३१,३३; १ पत १:४,५; २ पत २:६ ।

''उस'' यूहन्ना ६:३७; १७:६; १ कुरू ६:१६,२० ।

''दूर रहे'' यदि एक न्यायी दुष्टता करता है और बुरा करता है, तो उसके विश्वास पर प्रश्न उठता है । रोमि ८:१३,१४; १ कुरू ६:६; गल ५:२४; इफि ५:५,६; १ यूहन्ना २:४,६; ३:६,१० ।

२:२०, २१ - सांसार में दिखने वाली कलीसिया में भिन्न भिन्न प्रकार के लोग हैं, वे कुछ यीशु के हैं और यीशु उन्हें पहचाने हैं । (मत्ती १३:२४-३०, ३६-४३, ४७-५० से तुलना करें) यहाँ पौलुस दो प्रकार के लोगों की तुलना घर के दो प्रकर के बर्तनों से करता है । रोमि ६:२१ से मिलाए । पिछले पदों में पौलुस झूठे शिक्षकों और दुष्टता को छोड़ने की आवश्यकता पर जोर दे रहा था । झूठे शिक्षक और वे जो कलीसिया में बुरे कार्य करते हैं, असम्मानीय हैं (३:५) । यदि हम वैसे आदर के बर्तन बनना चाहते हैं जैसा चाहते हैं, हमें वह करना चाहिए जो वे करने के लिए कहते हैं । यदि हम नहीं करते, तो हम भ्रष्ट होने के खतरे में हैं ।१ कुरि १५:३३

२:२२ - १ तिमो ६:११; २ पत १:३-६ देखें । कुछ बातों की ओर हमें भागना चाहिए । नौजवानों में कुछ गंदी इच्छाएँ बहुत तेज होती हैं । उनसे बचने का सबसे अच्छा तरीका है कि जहाँ उनकी सन्तुष्टि की संभावना है, वहाँ से मागें और जहाँ वे प्रगट हो, वहाँ से हट जाए ।

''एक शुध्द हृदय'' - मत्ती ५:८

२:२३-पद १४,१६ अपने लक्ष्य से सर्वशक्तिमान के सेवकों को हटना नहीं चाहिए और झगड़ना तो बिल्कुल नहीं चाहिए ।

२:२४ ***''झगड़ालू होने के बजाए''*** यूनानी शब्द प्रेरित ७:२६ में ***''झगड़ा''*** है । जहाँ दूसरे के मुँह को बन्द करने की बात है उससे परमेश्वर का काम बढ़ता नहीं है । हालाँकि सत्य के लिए खड़े होने और लोगों को जीतने के लिए बातचीत करना अच्छा और आवश्यक है । किन्तु हम सर्तक रहें कि यह सब झगड़े में न बदल जाए । हमारा युध्द मनुष्यों के खिलाफ नहीं, शैतान के खिलाफ है । इफि ६:१२ ।

''सिखाना'' - १ तिमोथी ३:२

''धीरजवाला'' - प्रायः विरोधी कठोर, आपत्तिजनक और अनुचित बातें कहते और छीटाकसी करते हैं । ऐसी बातों को मसीह के सेवकों ने धीरज और प्रेम से सह लेना चाहिए ।

२:२५ ***''नम्रता से''*** - मत्ती ११:२६ से तुलना करे । यदि सत्य के विरोधी दीनता और सज्जनता से दिए गए निर्देषों को नहीं सुनते, हों और किसी तरीके से भी वे नहीं सुनेंगे । जब मसीह के सेवक सिखाते हैं तो विरोधियों के प्रति उनका रूख कैसा होना चाहिए । यह भी देखें कि सृष्टिकर्ता लोगों को योग्य करते हैं कि वे मन बदलने का फैसला लें न कि हमारे तर्क-विर्तक (प्रेरित ५:३१) यीशु के सत्य को समझने के लिए मात्र मन बदलना आवश्यक है ।

२:२६ - ***''होश में आकर''*** लूका १५:१७ से तुलना करें । जो लोग मसीह के संदेश का विरोध करते हैं वे आत्मिक रीति से दिमाग से सरके हुए हैं । सभोप ६:३ से तुलना करें) अपने कल्याण के खिलाफ वे बेवकूफी का व्यवहार करते हैं । ऐसा इसलिए है क्योंकि शैतान ने उन्हें गुलाम बना लिया है और उन्होंने उसके झूठ को अपना लिया है । (यूहन्ना ८:४४; प्रेरित २६:१८; २ कुरि ४:४; इफि २:२ से तुलना करें । जो विरोधी ताकते हैं, उनके बारे में उन्हें अनजान नहीं होना है । उन्हें यह जानना है कि मात्र यहोवा की शक्ति लोगों को आज़ाद कर सकती और इसे हासिल करने के लिए परमेश्वर सत्य की शिक्षा का उपयोग कर सकते हैं ।

३:१ - ''अन्तिम दिनों'' याकूब ५:३; १ पत १:५; यहूदा १८ - इस युग के अन्त का समय । आरम्भ से ही भयंकर समय रहे हैं । और २-४ पद के अनुसार लोग इस पृथ्वी पर रहे हैं । रोमि १:२८-३२ से तुलना करें । पौलुस का मतलब यह है कि दिन और बुरे हो जाएगे और इस तरह के लोग पृथ्वी पर कलीसिया में दिखेंगे (पद ५)

३:२-४ इन पदों में ***''प्रेमी''*** शब्द मुख्य है । इन भयानक समयों में खतरनाक लोग होंगे, लेकिन गलत बातों के प्रेमी उनका चरित्र परमेश्वर

२ बहुत कठिनाई के समय होंगे । **लोग** स्वयं के और धन के प्रेमी, अपनी हाँकनेवाले, घमण्डी सृष्टिकर्ता के विरोध में कहनेवाले,
३ माता-पिता की बात टालनेवाले, धन्यवाद न देनेवाले और अशुध्द । **स्वभाविक** प्रेम रहित, क्षमा न करनेवाले, निन्दा करनेवाले,
४ बिना सयंम के, निर्दयी और अच्छाई के विरोधी । **विश्वासघाती**, ज़िद्दी, घमण्डी और स्वर्गिक पिता को चाहने के बजाए स्वयं को
५,६ प्रसन्न करने वाले होंगे । **धर्मी** दिखेंगे, किन्तु भीतर से खोखले । ऐसे लोगों से किनारा करना ।**इसी** तरह के कुछ लोग उन
स्त्रियों के घरों में चालाकी से पहुँच कर उन स्त्रियों को अपने वश में कर लेते हैं, जो हर तरह की दुष्टता से लदी और
७,८ लालसाओं के वश में हैं । **ये** महिलाएँ कुछ न कुछ नया सीखती रहती हैं, लेकिन सत्य को पहचानती नहीं । **जिस** तरह से
यन्नेस और जम्ब्रेस ने मूसा का विरोध किया, उसी तरह से ये गंदे मनवाले लोग जहाँ तक विश्वास का प्रश्न है, किसी काम
९ के नहीं ।**उन्हें** कोई सफलता नहीं मिलेगी और जिस तरह से मूसा के विरोधियों की मूर्खता सबके सामने आ गयी, उनके साथ भी
१०,११ ऐसा होगा । **किन्तु** तुमने मेरी शिक्षा, लक्ष्य, विश्वास धीरज प्यार और सहते रहने को देखा है ।**अन्ताकिया**, इकुनियम और
१२ लुस्त्रा में मुझे क्या क्या सताव और कठिनाईयों का सामना करना पड़ा ? मैंने क्या क्या न सहा ?**लेकिन** यीशु ने मुझे उन
१३ सब से छुड़ा लिया । जो लोग यीशु मसीह के होने के कारण खरा जीवन जीना चाहेंगे, वे सताएं जाएंगे । **लेकिन** दुष्ट और
१४ धोखेबाज लोग बद से बदतर होते जाएंगे, खुद धोखा खाते हुए दूसरों को भी उस गड्ढे में ढकेलेंगे ।**परन्तु** यह जानते हुए
१५ कि तुमने किससे सीखा है, तुम्हें वह सब करते रहना चाहिए, जो तुमने मुझसे सीखा है ।**बचपन** से तुम स्वर्गिक पिता के

के वचन की सत्य शिक्षा के विरोध में होगा ***''वे अपने आप के प्रेमी होंगे''***

''धन के प्रेमी होंगे'' - लूका १६:१४; १ तिमो ६:१० से तुलना करें ।

''स्वयं को प्रसन्न करने वाले' (पद ४) १ तिमो ५:६; तीतुस ३:३; याकूब ४:३ २पत २:१३ ।

भलाई और सत्य, माता-पिता और पड़ोसी, और परमेश्वर के प्रति, वे बिना प्रेम के होंगे । पापमय बातें जो मज़ा देती है, उन्हें वे मसीह के कारण त्यागना नहीं चाहेंगे । धन के सम्बन्ध में आज्ञाकारिता को अपनाने और किसी बात को त्यागने में रूचि नहीं होगी । वे अपने रवैये और कामों से दिखा देंगे कि उनमें परमेश्वर का प्रेम नहीं है (१ यूहन्ना २:१५,१६; मत्ती २२:३७-४०; १ कुरि १३:१-३; १६:२२ ।

इस कारणवश वे सब और दूसरी बुराईयाँ जिनका यहाँ वर्णन है उनके मन में भरी रहेंगी । वे इन पर घमण्ड करेंगे । उनके डाँटे जाने पर वे गाली देंगे । रोमि १:२१ के समान उनमें भी धन्यवाद नहीं होगा । दूसरों को माफ न करने से वे दिखाएंगे कि उनके भीतर सृजनहार की सी क्षमा नहीं है । विश्वासी लोग उन पर और उनकी बातों पर भरोसा न रख सकेंगे । हालाँकि वे आत्मिक रीति से अन्धे और अज्ञान होंगे वे सोचंगे कि उन्हें सब आता है । वे सच्चे सिखानेवालों की न सुनेंगे ।

३:५- ***''धर्मी दिखेंगे'*** बाहर से वे मसीह के माननेवाले होंगे, भीतर से फाड़ खानेवाले भेड़िए (मत्ती ७:१५) । दूसरे शब्दों में वे ढोंगी होंगे । वे भली भाषा का उपयोग करेंगे, किन्तु इसका अर्थ न जानेंगे । अपराधियों से बचाने के शुभसंदेश की ताकत को वे नहीं जानते (रोमि १:१६) यह भी कि सुसमाचार की शक्ति लोगों को नया कैसे बनाती है (यूहन्ना ३:५-८) । इस सामर्थ को अपने जीवन में न जानते हुए, वे इसका इन्कार करते हैं ।

''ऐसे लोगो से किनारा करना'' - तुलना करें २:२१; मत्ती १८:१७; १ कुरि ५:११,१३; २कुरि ६:१७; २ थिस्स ३:६; तीतुस३:१० । पौलुस की यह सलाह कि ऐसे लोगों से बचे रहें यह दिखाती हैं, कि ऐसे लोग उन दिनों में थे । प्रत्येक पीढ़ी में ऐसे लोग हैं । ऐसा संभव है कि इस युग के अन्तिम समय में ऐसे लोग और अधिक होंगे (मत्ती २४:१०-१४, २थिस्सु २:१-१२) ।

३:६ - इनमें से कुछ कपटी ऐसे लोगों की तलाश करेंगे जिन्हें धोखा दिया जाए या वश में किया जाए । उनकी आँखे कलीसिया की स्त्रियों पर लग जाएंगी । पुरूषों की तुलना में वे आसानी से फँस जाती हैं ।

३:७ - यह बहुतों की दुखद स्थिति है । वे बार बार सत्य को सुनती हैं । ऐसा लगता है कि वे सत्य को चाहती भी हैं । किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है, इसलिए वे जो सुनती हैं, समझती नहीं । इसलिए सत्य के विरोधी उन्हें गुमराह कर देते हैं २ थिस्सु २:१०) ।

३:८ - जैन्नेस और जैम्ब्रेस का नाम मात्र इसी स्थान पर आया है किन्तु मूसा के विरोध में हम निर्गमन ७:१०,१२,२२ में पढ़ते हैं ।

''गंदे मनवाले' - तिमो ६:५

३:९ - वे सत्य की कमी और शक्ति को सदा तक छुपा नहीं पाएंगे। जैन्नेस और जैम्ब्रेस की सच्चाई सबके सामने लायी गयी (निर्गमन ८:१८) । इसी तरह से इन ढोंगियों के साथ होगा ।

३:१० - पौलुस स्वयं के लिए आदर और प्रशंसा नहीं चाह रहा था । वह इस प्रकार इसलिए कहता है क्योंकि वह जानता था कि जग के स्वामी ने उसे विश्वासियों और मसीह सेवकों के लिए एक नमूना बनाया ताकि वे और तिमोथी उसके समान जीवन जिएं (पद १४; १ कुरि ११:१; फिलि ३:१७; २ थिस्सु ३:७; प्रेरित २०:१८-३५)

३:११ - प्रेरित १३:४६-१४:२०; २ कुरि ११:२३-२७

३:१२ - यूहन्ना १५:१८-२१; १६:३३; प्रेरित १४:२२; १ पत ४:१,१२; रोमि ८:१७ ।

''मसीह में'' - १:९ । सताव, एक स्थान का दूसरे स्थान से एक समय का दूसरे समय से, भिन्न हो सकता है । कभी कभी शारीरिक दु:ख और कभी कभी तुच्छ ठहराया जाना और एक दूसरे के बीच पक्षपात करने के रूप में हो सकता है । सभी विश्वासी कभी न कभी किसी रूप में इसका सामना करेंगे ।

३:१३ - उनके पास बुरा उद्देश्य होता है और उसी ओर वे आगे बढ़ते हैं । बुराई से बुराई उत्पन्न होती है । दूसरों को धोखा देने से स्वयं सच्चाई को समझ पाना कठिन होता है ।

३:१४ - पद १०; १:१३,१४; १ तिमो १:३

३:१५ - ***''बचपन से''*** - १:५ इसका अर्थ यह हो सकता हैं कि इसके पहले कि वे यीशु में विश्वास करने लगे, उन्होंने उसे ओल्ड टेस्टामैन्ट (पवित्र वचन) सिखाया । व्यवस्था ६:६,७ के वचन को उन्होंने गंभीरता से लिया था । क्या मसीही अभिभावकों को उससे कुछ कम करना चाहिए ? इफि ६:४ । ***''अभी पवित्र वचन''*** ओल्ड टॅस्टामॅन्ट और न्यू टॅस्टामॅन्ट मिलाकर हैं । ध्यान दें, यदि लोग ओल्ड टॅस्टामॅन्ट ठीक से समझें तो लोगों को मुक्ति के लिए बुध्दिमान बना सकता है । लूका २४:२५-२७, ४५-४७; यूहन्ना ५:३९,४६ से तुलना करें ।

वचन को जानते हो, जो जग के रचयिता की प्रेरणा से दिया गया और मसीह यीशु पर विश्वास करके मुक्ति पाने के लिए बुद्धिमान
१६ बनाता है । **बाइबल** सृजनहार की आत्मा से रची गयी है और सिखाने, कायल करने, गलती सुधारने और सही कार्य करने
१७ की दिशा दिखाने के योग्य है । **ताकि** यहोवा का जन स्वयं मज़बूत हो एवं प्रत्येक अच्छे काम के लिए सक्षम हो ।
४ **परमेश्वर,** और दोबारा आकर मरे हुओं और जीवित लोगों का न्याय करनेवाले मसीह यीशु की उपस्थिति में तुम्हें मैं यह
२ आदेश देता हूँ, **ईश्वरीय** संदेश सुनाओ, हर समय तैयार रहो । गलतियों के लिए लोगों को डाँटो, धीरज के साथ सिखाओ
३ और कायल करो । **एक** समय आएगा, जब लोग सही शिक्षा न सह सकेंगे, किन्तु अपनी पसन्द की बातों को सुनने और
४ उनसे सन्तुष्टि पाने के लिए ढेर सारे शिक्षकों को बटोर लेंगे ।**अपने** कानों को सत्य से हटाकर वे अपना ध्यान खोखली
५ कहानियों पर लगांएगे । **तुम** संयम की आदत डालो और अपने आप को प्रसन्न करने का प्रयत्न नहीं करो । एक संदेश
६ देनेवाले का जीवन जियो । अपनी ज़िम्मेदारी को पूरी तरह से निभाओ ।**मैं** उण्डेले जाने वाली भेंट की तरह उण्डेले जाने पर
७ हूँ और इस पृथ्वी पर से मेरे जाने का समय आ गया है । **मैं** प्रतियोगिता में पूरे तन मन से भाग लेता रहा हूँ । मैंने अपनी

"वह विश्वास जो मसीह में है" ओल्ड टेस्टामैन्ट अपने आप में एक लक्ष्य नहीं है । पूरा प्रकाशन नहीं है । यह मसीह की ओर इशारा है और घोषणा करता है कि सभी यीशु पर विश्वास करें ।

३:१६ ***"बाईबल"*** पुराने अनुवाद में शब्द ***"सभी शास्त्र"*** आया है, जिससे कुछ लोग समझते थे कि सभी धर्मों की धार्मिक पुस्तकें । २ पतरस १:२०,२१, मत्ती ४:४; ५:१७,१८; १५:३, ४; २२:४३; मरकुस १२:३६ लूका २४:४४; यूहन्ना १०:३५; प्रेरित ४:३५; १ कुरि २:१३; इब्रा १:५-१३; १ पत १:११; प्रका १:१; २:१; २२:१८,१६ । यिर्मयाह १:२,६ से तुलना करें । न्यायियों को पुस्तक का परिचय भी देखें ।

"सृजनहार की आत्मा से" या सृजनहार के श्वास फूँकने से । अपने भविष्यव्दक्ता सेवकों के मन में पालनहार ने अपने सत्य और विचारों को डाला । जो कुछ वह उनसे लिखवाना चाहते थे, वह सब उनके दिलों में डाला और प्रेरणा दी । इसलिए वचन सर्वशक्तिमान व्दारा प्रेरित थे । एक दूसरे स्थान पर कहा गया है कि जो कुछ सृष्टिकर्ता के मुख से निकलता है उस से मनुष्य जीवित रहेगा ।

परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया । केवल इसलिए नहीं कि मनुष्य बाइबल की उपासना करे और उसे पवित्र जाने । बाइबल इसलिए दी गयी ताकि मनुष्य इसका उपयोग करे । चार तरीकों से यह लाभदायक है- परमेश्वर, मसीह, मनुष्य, मुक्ति के विषय सिखाने, दुष्टता और गलत शिक्षा के लिए डाँट और उन्हें सुधारने के लिए जो गुमराह हो जाते हैं । यह प्रशिक्षण देने के लिए कि गंदे संसार में खरा जीवन कैसे बिताएँ ।

३:१७- मसीह का कोई सेवक बिना बाइबल ज्ञान के किसी अच्छे कार्य के लिए योग्य नहीं बनाया जा सकता । हम दूसरी बातें सीख सकते हैं । हमारे जीवन का यह प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए ।

"प्रत्येक अच्छे काम के लिए" २:२१; इफि ४:११-१३, इब्रा १३:२०,२१ ।

४:१-पौलुस गंभीरता से कहता है । कुछ महत्वपूर्ण बातों के बारे में वह सिखा रहा है ।

"न्याय" यूहन्ना ५:२७; प्रेरित १७:३१; रोमि २:१६; १ कुरि४:५; २ कुरि ५:१० ।

"दोबारा आकर" - पद ८; तिमो ६:१४; तीतुस २:१३; इब्रा ६:२८ ।

"राज्य" मत्ती ४:१७; १३:११,१६:२८; २५:३४; लूका १६:११,१२; प्रेरित १:३,६ ।

४:२ ***"ईश्वरीय संदेश सुनाओ"*** यहा पास्टरों, शिक्षकों और शुभ संदेश सुनानेवालों के लिए एक बड़ा काम है (पृथ्वी पर इससे बड़ा कार्य और कोई नहीं) । उन्हें अपने मत या दूसरे के विचारों को नहीं बताना है । केवल यहोवा का वचन उनका संदेश होना है । मत्ती २८:२०; मरकुस १६:१५; १ कुरि १:२३; २:१-५; २ कुरि ४:५; १ पत ४:११ ।

"हर समय" मण्डली में या मण्डली के बाहर, सुविधा और असुविधा में ।

"गलतियों के लिए डाँटो" - ३:१६; १थिस्स ३:२; ४:१८; १ तिमो ५:२०; तीतुस १:६,१३; २:१५; इब्रा ३:१३; १०:२५ ।

"धीरज के साथ सिखाओ और कायल करो"-२:२४,२५ । ४:३,४ ३:१; १ तिमो ४:१ देखें ।

"सही शिक्षा"-१:१३; १ तिमा १:१०,११; ६:३; तीतुस १:६, २:१ ।

"सन्तुष्टि पाने के लिए" - ऐसे लोग वह सब करना और सुनना मांगते हैं, जो वे चाहते हैं । उनका प्रश्न यह नहीं कि सच्चाई क्या है ? लेकिन किस बात से उन्हें मज़ा आता है । वे सत्य को नहीं चाहते क्योंकि सत्य से, उनके जीवन शैली की निन्दा होती है और उनके तरीके मे अड़चन आती है । इसलिए वे सत्य से वापस अंधेरे में जाते हैं । यही उनका बड़ा अपराध और दोष है - यूहन्ना ३:१८-२० मुक्ति पाने के लिए हमे सबसे अधिक सत्य की ज़रूरत है । किन्तु ये लोग इसे नहीं चाहते । देखें २ थिस्सु २:१०-१२ । १तिमो १:४; ४:७; तितुस २:१४ ।

"संयम" २:३ ।

"संदेश देने वाले" - हालांकि तिमोथी एक पास्टर शिक्षक था, अपनी सेवा व्दारा उसे लोगों को जीतना भी था ।

४:६-***"उण्डेले जानेवाली भेंट"*** - फिलि २:१७ ।

"मेरे जाने का समय" - यीशु ने उसे यह बता दिया था ।

४:७-***"प्रतियोगिता"*** - १ कुरि ६:२६; २ कुरि १०:४; १ तिमो १:१८; ६:१२ इफि ६:१०-१८ ।

"दौड़"- १ कुरि ६:२४; गल २:२; ५:७ फिलि ३:१३,१४; इब्रा १२:१; प्रेरित २०:२४ में जो उसका लक्ष्य था, वह पूरा हुआ ।

"विश्वास" - विश्वास के लिए नींव के रूप में जिस सत्य को परमेश्वर ने दिया था । यह उसे सौंपा गया था । १ कुरि ४:१; इफि ३:२-६) । उसने उसे बना कर रखा - अपने विश्वास के लक्ष्य और जीवन के एक नियम के रूप में और एक प्रबंधक के रूप में ताकि दूसरों को दे सके । इसलिए कि उसने यह ईमानदारी से किया था, अपने जाने के विषय में खुश था ।

४:८ ***"मुकुट"*** यहाँ यूनानी शब्द (और १ कुरि ६:२५ में; फिलि ४:१; १ थिस्सु २:१६, याकूब १:१२; १ पत ५:४; प्रका २:१०; ३:११ आदि में जो उपयोग किया गया है । राजाओं के मुकुट की बात नहीं कर रहा है । यह एक पत्तियों से बना माला हुआ करता था, जो उन दिनों प्रतियोगिता में जीतने वालों को दिया जाता था । अपनी दौड़ के अन्त में पौलुस उसी की प्रतीक्षा में था । १ कुरि ६:२५ से तुलना करें ।

८ दौड़ पूरी कर ली है और विश्वास की रक्षा की है ।**धार्मिकता** का मुकुट मेरे और उन सब के लिए रखा है जिसे, सच्चे जज
६,१० यीशु मुझे और यीशु के आने की चाहत रखनेवाले लोगों को उस दिन देगें । **मेरे** पास जल्दी आ जाओ । **वर्तमान** संसार
की ओर आर्कषित होकर देमास मुझे छोड़कर, थिस्सलुनीके चला गया है । क्रेसेंस गलतिया चला गया है तथा तीतुस दलमतिया ।
११,१२ **मात्र** लूका मेरे साथ है । मरकुस को अपने साथ ले आओ, क्योंकि सेविकाई मे वह सहायक है ।**तुखिकुस** को मैंने इफिसुस
१३ भेज दिया है । **त्रोआस** में कार्पुस के घर पर मेरा चोगा, किताबें और विशेषकर पार्चमॅन्ट छूट गए थे, आते समय वह सब
१४,१५ ले आना । एलेक्ज़ेन्डर ठठेरे ने मेरी बहुत हानि की थी । उसकी करतूतों को मैंने परमेश्वर के सपुर्द कर दिया है ।**तुम** भी
१६ उससे सम्भल कर रहना, क्योंकि उसने वचन का डट कर विरोध किया था ।**मेरी** पेशी के समय, किसी ने मेरा साथ नहीं दिया,
१७ लेकिन मुझे अकेला छोड़ दिया था । परमेश्वर उन्हें माफ करें ।**फिर** भी यीशु मेरी ओर थे और मुझे हिम्मत दी, ताकि मेरे
१८ द्वारा संदेश गैरयहूदियों तक पहुँचे । मैं शेर के मुँह से छुड़ा लिया गया था ।**यीशु** मुझे हर एक बुरे आक्रमण से छुड़ाकर अपने
१६ स्वर्गिक राज्य की तैयारी के लिए सुरक्षित रखेंगे । युगानुयुग उन्हीं को सम्मान मिले । ऐसा ही हो । उनेसिफुरूस के घराने,
२० प्रिस्का और अक्विला को नमस्कार । इरास्तुस कुरिन्थुस ही में रह गया था, लेनित्रुफिमुस को बीमारी की हालत में मैंने
२१ मिलेतुस में छोड़ा था । **सर्दी** शुरू होने से पहले आने की कोशिश करना । यहाँ यूबुलुस, पुदेंस, लायनस, क्लोदिया और दूसरे सभी
२२ विश्वासी नमस्कार कहते हैं । **यीशु** तुम्हारी आत्मा के साथ हो और परमेश्वर की असीम कृपा भी । ऐसा ही हो ।

धार्मिकता के मुकुट का अर्थ है, एक मुकुट जो खरे जीवन जीने से मिलता हैं । अधार्मिकता के विरोध में लड़ने अच्छी दौड़ दौड़ने और खरे विश्वास को बनाए रखने से यह मिलता है । मुकुट के सम्बन्ध में ऊपर दिए पदों को देखें ।

"उस दिन" - १:१२,१८; २ थिस्सु १:१०

"आने की चाहत रखने वाले" धार्मिकता के मुकुट और मसीह के आने की प्रतीक्षा करने वाले में क्या सम्बन्ध है । जो खरा जीवन जी रहे हैं, वे मसीह के दोबारा आने का इन्तजार करते है । जो उनके आने की प्रतीक्षा में हैं, वे अपने आपको शुध्द करेंगे । देखें १ यूहन्ना ३:२,३ । उनके आने के विषय में सिखाना काफी नहीं है । धार्मिकता के मुकुट का प्राप्त करने का अर्थ, हमें उसे बहुत चाहना है ।

४:१० -***"वर्तमान संसार से आकर्षित होकर"*** - किसी के बारे में यह कहा जाना दुःख की बात है । १ यूहन्ना २:१५-१७ ।

४:११-***"लूका"*** कुलु ४:१४; फिले २४ ।

"मरकुस" - प्रेरित १२:२५; १३:५,१३; १५:३७,३६; १ पत ५:१३ । अपनी असफलता के बाद भी मरकुस विश्वासयोग्य रहा । यह अच्छी बात है कि हमारी हार के बावजूद जग के स्वामी हमको छोड़ते नहीं, किन्तु हममें और हमारे साथ कार्य करके हममें बेहतर बनाते हैं ।

४:१३-***"पार्चमॅन्ट"***-स्क्रॉल पॅपायरस पौधे से और पार्चमॅन्ट, पशुओं की खाल से बनाए जाते थे । ४-१४,१५-१:१५;२:१७; १ तिमो १:२०

४:१६-***"साथ"*** वह जेल में था अदालत में पेश होना था । यहाँ वह आरम्भ की पेशी की बात करता है । प्रेरित २४ से तुलना करें ।

"साथ नहीं दिया" -१:१५ लूका उस समय वहाँ नहीं था । ऐसा संभव नहीं था, कि उसे छोड़ दिया गया हो ।

४:१७ यीशु के सेवकों को लोग छोड़ सकते हैं लेकिन, यीशु नहीं छोड़ते इब्रा १३:५,६ ।

"हिम्मत" - यशा ४०:२६-३१ । प्रेरित १८:६,१० से तुलना करें ।

"पहुँचे" शायद पौलुस की ओर इशारा कर रहा था, जिन्होंने वहाँ गैर यहूदियों के साथ उसके मुकदमें की कारवाई की थी । संदेश देने के लिए यीशु ने उसे साहस दिया था । मत्ती १०:१७-२०; मरकुस १३:६; लुका २१:१२-१५; प्रेरित २६:१६-२३ से तुलना करे ।

"शेर के मुंह से" इसका अर्थ भयंकर खतरे से था । यह नहीं मालूम कि शारीरिक या आत्मिक खतरा ।

४:१८ -***"मुझे छुड़ाकर"*** उसका मतलब यह नहीं था कि उसकी मृत्यु का समय निकट आया है - पद ६ । किन्तु वह निश्चित था, कि यीशु उसे प्रत्येक खतरे से बचाएंगे और अपने समय में स्वर्ग बुला लेंगे । तुलना करें मत्ती ६:१३ ।

४:१६ -***"प्रिसिल्ला और अक्विला"*** - प्रेरित १८:२,१८,१६,२६; रोमि १६:३ ।

४:२१ -पद ६,१३ । उस क्षेत्र में शीतकाल बहुत भीषण हो सकता है ।

४:२२ -पौलुस ब्दारा लिखे ये आखिरी शब्द हैं । अपनी सेवकाई के दो मुख्य विषयों को वह दोहराता है - यीशु मसीह की उनके लोगों के साथ उपस्थिति और स्वर्गिक पिता की शर्तहीन दया जो बचाती, संभालती और आशीष देती है ।